Anubhav's uploads
मनोज कॉमिक्स
संख्या 859 मूल्य 7.00
हवलदार बहादुर और कनकटा डकैत
इस कॉमिक्स के साथ एक स्टीकर मुफ्त
-बेदी
RAJ COMICS FAN NATION

हवलदार बहादुर और कानकटा डकैत
चित्रांकन बेदी
लेखक विनय प्रभाकर
एक सुबह थाने में -
खर्र... खर्र...
खर्र खर्र...
तभी एक सिपाही ने हवलदार बहादुर को जगाया।
क... कौन है?
ही... ही... ही... आप तो डर गये जी।
डर गये के बच्चे, यह क्या तरीका था जगाने का?

गलती हो गई साहब! आप फिर सो जाइये, मैं आपको दूसरे तरीके से जगाता हूं।
बकवास बंद कर, क्यों जगाया मुझे?
इंस्पेक्टर साहब ने याद फरमाया है आपको।
ठीक है, अ... आता हूं। आ... आँ...!
फिर-
सर, आपने मुझे जगवाया। म... मेरा मतलब है बुलवाया?
हां हवलदार। एक खतरनाक काम के लिए मुझे तुम्हारी जरूरत है।
खतरनाक काम? यह मुझे मरवाने के चक्कर में है।
ही... ही... ही... फिर तो आपने मुझे बुलाकर गलती की है सर। मेरे जैसे अक्ल के कोरे आदमी के बस का खतरनाक काम कहां?
अपनी मूर्खता का कोई सबूत है तुम्हारे पास?
यह देखिए साहब।
यह तो तुम्हारी पत्नी की तस्वीर है।
यस सर! आप ही बताइये, क्या कोई बुद्धिमान व्यक्ति इस स्त्री से शादी कर सकता था? ही... ही... ही...!
ओह हवलदार! तुम तो बस...!

...क्या मेरी ...र्वता का यह ...माण काफी नहीं है ?
फालतू बात मत करो। और जिस काम के लिए मैंने बुलाया है, उसे समझ लो।
कुछ देर बाद-
BANK OF KAKRODA
खड्गसिंह कह रहा था कि कुछ डाकू इस बैंक को लूटने की कोशिश कर सकते हैं। खैर कोई बात नहीं, आने दो। हवालात में बंद करके सड़ा दूंगा सालों को।
बैंक के चारों ओर नजर रखनी होगी।
फिस...फिस...
आंय...!
क्यों बे, यह फिस-फिस क्या होती है ?
ही... ही... ही...!
अबे साले, पहले पुलिस को फिस-फिस करके बुलाता है और फिर ही... ही... ही... करता है। ठहर, अभी तेरी ही... ही... ही... बंद करता हूं।
नाराज न होओ। मैं तो आपको कुछ बताना चाहता हूं जी।
तो जल्दी बता।
उधर गली में चलिए, प्राइवेट बात है।
ठाक

आ गये गली में, अब बता बे।
बात यह है जी कि एक आदमी ने मुझे पचास रुपये देकर कहा है कि मैं आपको कुछ देर के लिए बैंक के...
...निकट से हटा दूं। ही... ही... ही...!
और मैंने अपना काम कर दिया है। ही... ही... ही...!
साले, मुझे मूर्ख बनाता है। रुक जा, अभी मजा चखाता हूं तुझे।
छोड़ूंगा नहीं साले।
ही... ही... ही...!
उधर बैंक के सामने एक कार आ कर रुकी और उसमें से तीन बदमाश बाहर आए—
खबरदार...
...मेरा नाम कनकटा डकैत है। जो भी मेरे रास्ते में आता है, मैं उसके कान काट देता हूं।
उस्ताद ठीक कह रहे हैं।
कोई रास्ते में मत आना।

चल बे, कैश का बक्सा मेरे हवाले कर दे।
ड... ड... ड... डाकू...जी... मेरी नौकरी चली जाएगी।

और कैश नहीं देगा तो तेरे कान चले जायेंगे।
काट दूं उस्ताद इसके कान?

नहीं ऽऽऽ म... म... मैं... कैश देता हूं।
शाबाश, वरना तेरे कान काट देता... हा... हा... हा...!

कैश का बक्सा लेकर लुटेरे बाहर निकले–
जल्दी गाड़ी में रखो।
बैंक का चौकीदार उस वक्त बीड़ी खरीदने गया हुआ था। वापसी पर उसने लुटेरों को देखा।
ओह! डाकू!

धांय

भागो!
उसके दोबारा बंदूक लोड करने से पहले ही लुटेरे भाग निकले थे।
जूंsss
धांय
आह!
जबकि हवलदार बहादुर अभी तक गलियों में दौड़ फिर रहे थे।
हफ्फ... हफ्फ... बहुत दौड़ाया है साले ने। पता नहीं कहां चला गया?
तभी-
अरे हवलदार जी! आप यहां खड़े हैं और वहां बैंक में डाका पड़ गया है।
डाका... अरे बाप रे!
और-

वह बैंक के निकट पहुंचे।
BANK OF KAKROOA
REST
चर्र...चर्र...

क्या मामला है हवलदार बहादुर?
म...म...मुझे कुछ नहीं पता सर।

इंस्पेक्टर साहब, कनकटा डकैत बैंक लूटकर भाग गया है।
कनकटा डकैत? ही...ही...ही...यह क्या नाम हुआ?

शटअप! यहां डाका पड़ गया और तुम हंस रहे हो। तुमने कनकटे को पकड़ा क्यों नहीं?
म... मैंने उसे देखा ही नहीं साहब। मुझे तो एक खुराफाती उधर गलियों में दौड़ाए हुए था।

तो दफा हो जाओ यहां से। थाने आकर तुमसे बात करूंगा।
ही... ही... ही... जब तक यह थाने आएगा, मेरी ड्यूटी ऑफ हो चुकी होगी। और फिर कल से तो मेरी पन्द्रह दिन की छुट्टियां शुरू हो रही हैं।

बैंक में तफ्तीश के बाद खड़गसिंह कमिश्नर साहब के पास पहुंचा-
सर, यह सब हवलदार की मूर्खता के कारण हुआ है। आप उसे सस्पैण्ड कर दीजिए।
नहीं इंस्पेक्टर। हवलदार बहादुर मूर्ख जरूर है, लेकिन उसकी मूर्खता से हमें हमेशा लाभ ही पहुंचा है।

मगर इस बार उसकी मूर्खता के कारण बैंक लुट गया है सर।

तो तुम लुटेरों को तलाश करो। आखिर तुम्हारी भी कुछ जिम्मेदारी है। हवलदार बहादुर पर असफलता की जिम्मेदारी डालना ठीक नहीं है।
उधर हवलदार बहादुर के घर में–
छुट्टियां आराम करने के लिए ली थीं, मगर चम्पाकली की बच्ची ने स्टोर की सफाई पर लगा दिया... गुर्र... गुर्र...!
तभी–
आई... ई... ई...
चूहे से डर कर हवलदार बहादुर धड़ाम से जमीन पर आ गिरे–
अरे, क्या हुआ?
च... च... चूहा।
तभी–
जूंsss
ई... ई... ई...!
ही... ही... ही...!

अरे, हटाओ इसे। पकड़ो... बचाओ!
ठहर जा, मैं अभी अपना डंडा लेकर आता हूं।
कहां है, हवालात में बंद करके सड़ा दूंगा साले को।
वह तो भाग गया।
चुप रहो, चूहे से पहले तो तुम खुद भाग निकले थे।
तूने भागने क्यों दिया? मैं इस डण्डे से उसका तेल निकाल देता।
मैं तो तेरा तांडव देखकर घबरा गया था, इसलिए भागा था। ही... ही... ही...!
अच्छा, अब फालतू बातें बंद करो और स्टोर की सफाई करो।
हवलदार बहादुर फिर से सफाई करने में लग गये।
आंय! बंदूक!
धाड़

अरे, यह तो मेरे स्वर्गीय दादाजी की दोनाली है। इससे वह शेर मारते थे।
चम्पाकली...!
क्या चूहा घुस गया पायजामे में?
अरी, चूहे को तो अब मैं गोली मार दूंगा। देख, क्या है यह? ही... ही...ही...!
बंदूक।
हां, मेरे दादाजी की है। बहुत बड़े शिकारी थे वह। अब मैं उनकी बंदूक से शिकार खेलूंगा।
चूहों का शिकार। ही... ही... ही...!
बकवास मत कर। और अब स्टोर तू साफ कर ले। मैं तो बाहर बैठकर अपनी बंदूक में तेल डालूंगा।

मुझे तो याद ही नहीं था कि मेरे घर में बंदूक भी है। स्वर्गीय दादा जी बड़ी अच्छी चीज छोड़ गये हैं मेरे लिए।
उसी दिन जब उन्होंने शाम को अखबार देखा।
आवश्यकता है शिकारी चाहिए कर्नल धौलसिंह रूपनगर के जंगल में एक आदमखोर शेर के शिकार के लिए जाना चाहते हैं। इसके लिए उन्हें एक अनुभवी सहायक की आवश्यकता है। इच्छुक लोग तुरन्त आकर मिलें।
ही... ही... ही... हा... हा... हा...!
ही...ही...ही... हा...हा...हा।
अजी क्या बावले हो गये हो, जो आप ही आप हंस रहे हो?
अरी, यह बावलेपन की नहीं, खुशी की हंसी है। मुझे शिकार पर जाने का मौका मिल गया है।
और वह कर्नल धौलसिंह की कोठी पहुंच गये।
ही... ही... ही... मेरे जैसे खानदानी शिकारी से मिलकर कर्नल धौलसिंह खुश हो जाएंगे।
ओय छोकरे, कर्नल साहब घर पर हैं क्या?

क्या बोला बे, छोकरा?
ओय... यह तो गुटका आदमी है। ही... ही... ही।
दांत बंद रख अपने, वरना कोर्ट मार्शल कर दूंगा। गुर्र... गुर्र...!
नाराज क्यों हो रिया है गुटके? जरा कर्नल साहब से जाकर कह दे, एक शिकारी मिलने आया है।
मैं ही कर्नल हूं। धौलासिंह नाम है मेरा।
तुम? ही... ही... ही... तुम और कर्नल... हा... हा... हा... बड़े मजाकिया हो यार।
ओय, हंसना बंद कर, वरना तोप से उड़ा दूंगा। मैं सचमुच कर्नल धौलासिंह हूं।
तुमसे यह किस उल्लू के पट्ठे ने कहा कि मैं फौज का कर्नल हूं। अबे, कर्नल की उपाधि मुझे मेरे दोस्तों ने दी है। खैर, पहले यह बता कि तू कौन है?
मैं हवलदार बहादुर सिंह हूं।
हवलदार...? ही... ही... ही... हा... हा... तू और हवलदार?
मगर तुम तो बहुत छोटे हो। फौज के कर्नल गुटके तो नहीं होते?
ओय गुटके, हवालात में बंद करके सड़ा दूंगा। मैं सचमुच का हवलदार हूं।

और उन्होंने अपना परिचय-पत्र निकालकर दिखाया।
अरे! तुम तो सचमुच हवलदार हो।
मैं शिकारी भी हूं। अखबार में तुम्हारा इश्तिहार देखकर आया हूं।
कर्नल उन्हें भीतर ले आया।
बड़ी खुशी हुई तुमसे मिलकर। शिकार का तो काफी अनुभव होगा तुम्हें?
पूरा जीवन ही शिकार करते बीता है...
...शेर को तो मैं बिना गोली चलाए ही लपेट देता हूं।
अच्छा। आखिरी शेर कब लपेटा था, जरा बताओ।
मर गये, अब क्या बताऊं इसे?
ही...ही... ही...यह कोई छः महीने पहले की बात है। मैं...
...टहलता हुआ जंगल में निकल गया। अचानक एक शेर मेरे सामने आ खड़ा हुआ, लेकिन मैं बिल्कुल नहीं घबराया। शेर ने जैसे ही मुझे मारने के लिए अपना मुंह खोला, मैंने उसके मुंह में हाथ डालकर दुम पकड़ ली और फिर दुम को जो खींचा तो शेर जुराब की तरह उल्टा हो गया। साला।
वाह साहब वाह! कमाल कर दिया। शेर की यह दशा तो आज तक किसी शिकारी ने नहीं की होगी।
ही... ही... ही...!
साला बंडल मार रहा है।
तो बस, अब आप घर जाकर एक सप्ताह के लिए विदा ले आइये। कल सुबह ही हम जंगल के लिए निकल लेंगे।
मैं हुणी गया और हुणी आया कर्नल प्यारे। ही...ही...ही!

अगली सुबह–
अरे कर्नल, शिकार पर इस संदूक की क्या जरूरत है?
ओय, इसमें मेरे हथियार हैं।
कुछ देर बाद वे रूपनगर के जंगल में पहुंच गये।
य... यह तो बड़ा भयानक जंगल है?
क्या तुम यहां पहली बार आए हो?
अरे नहीं कर्नल। यहां तो मैं तब से आता रहा हूं। जब कच्छा भी नहीं पहनता था। म... मेरा मतलब है, दादाजी मुझे साथ लाते थे। ही... ही... ही...।
मुझे बड़ा गर्व हो रहा है। कितना अनुभवी शिकारी है मेरे साथ।
जल्दी ही–
यह जगह कैम्प लगाने के लिए ठीक रहेगी।
दोनों काम में जुट गये।
दो टैण्ट लगाने की क्या जरूरत है कर्नल?
एक में मैं रहूंगा और एक में तुम।
म... मुझे अकेले टैण्ट में रखेगा... रात में बोर आ गया तो...?
मैं तुम्हारे टैण्ट में ही रहूंगा कर्नल।
बिल्कुल नहीं। मुझे रात को अकेले सोने की आदत है।

मगर हम यहां सोने नहीं, शिकार खेलने आए हैं यार।

शिकार कल सुबह से खेलेंगे। आज रात को आराम करेंगे। तुम्हें अकेले सोते हुए डर तो नहीं लगेगा?

ब... बिल्कुल नहीं।

फिर रात घिर आई—

गुर्र... गुर्र!

ऊं... ऊं...

चीं sss चीं sss

ज...जानवर बोल रहे हैं।

सत्यानाश हो जाए उस गुटके कर्नल का। जंगल में लाकर फंसा दिया है मुझे। मेरी भी मत मारी गई थी, जो दादाजी की बंदूक देखकर खुद को शिकारी समझ बैठा। हु...हु... हु... हु...!

गुर्र...र्र... र्र!

चीं sss चीं sss

उधर कर्नल के टैण्ट में—

ही... ही... ही... अब देखूंगा, वह हवलदार का बच्चा कितने पानी में है?

और—

ही... ही... ही!

बहुत मजा आएगा।

सो रहा है, अभी बताता हूं।
खर्र... खर्र... खर्र... खर्र...
गुर्र... गुर्र!
ऊं हुं!
हवलदार बहादुर ने फि
करवट बदल ली-
इसकी तो नींद ही नहीं खुली
खर्र..खर्र
अभी जगाता हूं।
ही... ही... ही!
आंय! इस पर तो असर ही नहीं होता। कुछ और करना होगा।
गुर्र... गुर्र...!
अगले पल-
क... कौन है?
गुर्र... गुर्र...!

श... श... श... शेर।

गुर्र... गुर्र...!

हवलदार की घिग्घी बंध चुकी थी।

बचाओ... कर्नल... शेर आ गया... बचाओ...!

ही... ही... ही...!

अरे, यह तो आदमी की तरह हंसता है... कोई बचाओ रे।

अरे, बचाएगा कौन? तुम अपनी बंदूक उठाओ ना।

आंय! यह तो कर्नल की आवाज थी।

अरे कर्नल, क्या तुम शेर के पेट में से बोल रहे हो?

तो फिर घिग्घी क्यों बंध गई थी ? तुम तो कह रहे थे कि शेर को खाली हाथों से लपेट देते हो ?
अबे, मैं लपेटने ही वाला था कि तुम बोल पड़े। वैसे इस तरह का मजाक अच्छा नहीं होता कर्नल। अगर तुम मेरे हाथों मारे जाते तो क्या होता ?
अबे बस रहने दो, बहुत देखे हैं तुम्हारे जैसे मारने वाले। सो जाओ चुप करके।
अपनी तो पोजीशन ही खराब हो गई इस गुटके की नजर में।
अगली सुबह—
चलो कर्नल, शेर मारकर लाते हैं।
शेर को देखकर तुम्हारा पायजामा तो खराब नहीं होगा ?
तुम अपने पायजामे की चिंता करो कर्नल। मैं शेर से नहीं डरता।
तो फिर चलो।
वे शेर की तलाश में निकल पड़े—
शेर ऐसी ही झाड़ियों में आराम करते हैं।
बाप रे ! अगर सचमुच शेर मिल गया तो क्या होगा।
तभी—
सर्र... सर्र...
अरे ! उधर कोई जानवर है।
जरूर शेर ही होगा।

...त... तो तुम मार लो शेर को। मैं यहीं से देखूंगा।
ही... ही... ही... डर गये ना? अच्छा, तुम उस तरफ निशाना लो, मैं जाकर झाड़ियां हटाता हूं। अगर शेर हुआ तो तुरन्त गोली चला देना।
कर्नल झाड़ियों की ओर बढ़ा।
कर्नल, जरा संभलकर।
फिक्र नॉट।
निकट पहुंचकर उसने झाड़ियां हटाईं।
ओय!
ढेंचू... ढेंचू...
ही... ही... ही... गधे को शेर कह रहे थे कर्नल। हा... हा... हा...!
आगे चलो।
कुछ आगे चलकर-
वह झाड़ियां हिल रही हैं कर्नल।
सर्र... सर्र
इस बार तुम जाकर देखो, मैं निशाना लेता हूं।
वहां गधा मिला था, यहां शायद घोड़ा होगा?

और-
हुं... हुं...
हुं...!
गुर्र...
गुर्र...!
भागो।
गुर्र...गुर्र
कर्नल की बहादुरी भी सामने आ गई थी।
गुर्र...र्र...
र्र...!
स...स...
सचमुच का शेर।
दोनों एक पेड़ की ओर लपके।
पीं...टीं...!
ओय, मैं भी आ रिया हूं।
पलक झपकते ही दोनों पेड़ के ऊपर थे।
हफ्फ... हफ्फ... बाल-बाल बच गये।
म... मैंने तो सुना था, इस जंगल में शेर होता ही नहीं है।
तभी-
आ गया यमदूत!
बाप रे!
गुर्र...
र्र...र्र
म... मैं कुछ नहीं भाई। तू ही लपेट इसको।
अबे तो लपेटो न, तुम तो अनुभवी शिकारी हो।
गुर्र...

ओय, तेरे पास बन्दूक है। गोली मार दे शेर को।
अबे हां, बंदूक तो मेरे पास है।

मरने के लिए तैयार हो जा बे शेर के बच्चे।
गुर्र... गुर्र...

हवलदार ने घोड़ा दबाया।
ओय, गोली क्यों नहीं चली?
खट
गोली? उफ! मैं गोलियां तो साथ लाना भूल ही गया था।
उल्लू का पट्ठा।

तभी-
गुर्र... र्र... र्र...
अरे बाप रे!
ठाक

बाघ इस चोट से घबराकर भागा।
आंय!
भाग गया?
ही... ही... ही...! देखा कर्नल, भगा दिया शेर को। चलो, अब नीचे उतरें।
य... पहले तुम।
अब तुम भी आ जाओ।
धाड़
फिर उन्होंने जैसे ही अपनी बंदूक उठाई।
गुर्र... र्र... र्र...
ओय, शेर फिर आ गया।
हाय! मर गया।
घबराहट में हवलदार बहादुर पेड़ पर चढ़ना भूलकर एक तरफ को भाग निकले।
बचाओ!
इस समय उन्हें दौड़ता देखकर कार्ल लुईस भी शरमा जाता।

...दूर निकल आने के ...
हफ... हफ...!
तभी निकट की झाड़ियों से आहट उभरी।
ओय! लगता है, शेर यहां भी आ गया।
सर्र...सर्र
और-
चीं...चीं...
अरे, यह तो आदमी है।
वे दोनों उसी पेड़ के नीचे आकर रुके।
कनकटे उस्ताद ने तो यहां जंगल में लाकर भुरता मार दिया है।
ओय। कनकटे डकैत के साथी। तो बैंक लूटने के बाद यह लोग जंगल में आ छुपे हैं।

उस्ताद कह रहे थे कि आज रात हम यहां से निकलने की कोशिश करेंगे। उस्ताद की बांह में गोली लगी हुई है। वह किसी दूसरे शहर में जाकर अपना इलाज करायेंगे।

यह लोग उस खण्डहर की ओर जा रहे हैं, यानी वहीं छुपे हुए हैं। हवालात में बंद करके सड़ा दूंगा सालों को।
उन्हें पकड़ने की कोई तिकड़म लड़ानी होगी।

तभी-
कहां गया वह हवलदार की दुम। लगता है, उसे शेर खा गया है।

ही... ही... ही... कर्नल मुझे ढूंढ रहा है। आने दो साले को।
लगता है, अब मुझे अकेले ही वापस जाना पड़ेगा।

कर्नल जैसे ही पेड़ के नीचे पहुंचा।
कूं... ई..
पीं... टीं..

श...श... शेर!
पींटीं
तभी—
ही... ही... ही...!
धाड़
ई... ई... ई...!
श..श...शेर... जी... मुझे मत खाओ। मैं मर जाऊँगा।
ही...ही... ही... अबे मैं शेर नहीं हूं कर्नल।
तुम?
हां, आज तुम्हारी बहादुरी भी देख ली। ही... ही... ही...!
ही... ही... ही... तुम्हें ऐसा मजाक नहीं करना चाहिए था।
अब शर्मिन्दा मत हो। यह अच्छा ही हुआ कि तुम आ गये। हम दोनों मिलकर अपराधियों को पकड़ सकते हैं।
हवलदार ने उसे खण्डहर में छुपे लुटेरों के विषय में बताया।

कनकटा तो बहुत खतरनाक डाकू है। वह हम दोनों के कान काट डालेगा।
मगर वह घायल है। उसकी बांह में गोली लगी हुई है।
फिर तो हम कोशिश कर सकते हैं। ही... ही... ही...!
ही... ही... ही करना बंद करके तरकीब सोचो कर्नल।
अचानक-
शेर...!
क... कहां?
और-
टीं... टीं...
अबे डरो नहीं यार। मैं असली शेर की बात नहीं कर रहा।
हमारे पास शेर की जो खाल है, अगर उसे पहनकर हम में से कोई अचानक खण्डहर में पहुंच जाए तो लुटेरे डर जायेंगे और...!
फ... फिर...?
वाह कर्नल...!
पुच्च
हटो जी... ही... ही... ही...!

...ओ, तुम कैम्प से शेर की ...ल लेकर आओ। मैं पेड़ पर बैठकर खण्डहर की निगरानी करता हूं।
ठीक है।
कर्नल के जाने के बाद हवलदार फिर पेड़ पर चढ़कर बैठ गये।
अगर कनकटे को पकड़ लिया तो अपने नाम का डंका बज जाएगा पूरे शहर में। ही... ही... ही...!
कुछ ही देर में शाम हो गई और अंधेरा फैल गया।
कहां रह गया यह कर्नल का बच्चा? अंधेरा बढ़ता जा रहा है।
शेर उसी पेड़ के नीचे पहुंचा।
तभी-
ओह! कर्नल कैम्प से ही शेर की खाल पहनकर आया है।
लेकिन यह वास्तव में असली शेर था।
ओय, इतनी देर क्यों लगाई कर्नल?
गुर्र... ई... ई...
ओय, यह तो असली है।
और अगले पल उनका संतुलन बिगड़ गया।

अगले ही पल—
धाड़
यह क्या मुसीबत है ?
ऊपर से टपकी इस मुसीबत से शेर घबरा गया था।
भाग ले बेटा शेरसिंह, यह तो कोई खतरनाक चीज है।
ई... ई... ई... आई... ई... ई...!
हवलदार के मुख से निकल रही डर की आवाजों से घबराकर शेर और तेज दौड़ रहा था।
फिर वह दौड़ता हुआ खण्डहर में जा घुसा।
घर्र... र्... र्...
???
आंय!
उफ... शेर!
आदमी को शेर पर सवारी करते देख उनकी हालत खराब हो चुकी थी।
श... शेर...!
धाड़

हवलदार बहादुर मदद के लिए चिल्लाये थे।
कनकटे...!
अरे बाप रे! उस्ताद, यह हमें शेर पर चढ़कर पकड़ने आया है।
तभी शेर ने एक झटका दिया तो हवलदार उसकी पीठ से उछले और-
आह!
जूंऽऽऽ
मुसीबत से मुक्ति पाते ही शेर वहां से निकल लिया।
कनकटे का दूसरा साथी भी हवलदार के नीचे दबकर बेहोश हो चुका था।
अ...आह...उफ।
और कनकटे की हालत खराब थी।
क... कौन हो तुम... और वह शेर कहां गया?
ओह! यह तो मुझसे भी ज्यादा डरा हुआ है। मुझे इसे और डराना चाहिए।
अगले पल-
ही... ही... ही... कनकटे डकैत, वह शेर जरा मुंह-हाथ धोने गया है। वापस आकर तुम्हारा डिनर करेगा।
क्या बकते हो?

तभी-
ओय!
कर्नल...!
कनकटे ने जो शेर को आदमियों की तरह चलते देखा...
न... नहीं... हू... हू!
... तो भय के कारण लुढ़ककर बेहोश हो गया।
मैं तुम्हें वहां ढूंढ रहा था और तुमने अकेले ही आकर इन तीनों को लपेट दिया। बड़े उस्ताद हो।
कर्नल को असली बात नहीं बतानी चाहिए।
मेरा नाम हवलदार बहादुर है कर्नल। ऐसे दस-बीस अपराधियों को मैं अकेला ही लपेट देता हूं। तुम रस्सी तो लाए होगे?
हां। और जीप भी ले आया हूं। पेड़ के पास खड़ी है।
बदमाशों को रस्सी से अच्छी तरह बांधने के बाद-
तुम सचमुच बहादुर हो यार!
ही... ही... ही... यह बात तो मैं शुरू से ही कह रहा था, मगर तुम ही विश्वास नहीं कर रहे थे। ही... ही... ही...!
कनकटे डकैत को जब हवलदार ने खड़गसिंह के सामने पेश किया तो बेचारे खड़गसिंह का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया।

समाप्त